कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

दिल्ली का शूर सेनापति – बख्त ख़ान

स्थान: *दिल्ली*

वर्ष था 1857। पूरे भारत में अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ बग़ावत की चिंगारी भड़क उठी थी। मेरठ, कानपुर, झाँसी, लखनऊ... हर जगह सैनिक विद्रोह कर रहे थे। इसी समय, बरेली से एक लम्बे, सशक्त और बुद्धिमान अफ़सर अपने सैकड़ों सैनिकों के साथ दिल्ली की ओर चला। उसका नाम था — बख्त ख़ान।

बख्त ख़ान कोई साधारण सैनिक नहीं थे। वे ईस्ट इंडिया कंपनी की फ़ौज में ***सुबेदार मेजर*** जैसे उच्च पद पर थे। लेकिन अंग्रेज़ों का अत्याचार, शोषण और देश की लूट देखकर उनके दिल में विद्रोह का ज्वालामुखी फूट पड़ा।

दिल्ली पहुँचते ही उन्होंने मुग़ल बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र से भेंट की और दृढ़ स्वर में कहा — **"महाराज, मुझे अपने सैनिकों की कमान सौंप दीजिए। मैं अंग्रेज़ों को दिल्ली से खदेड़ दूँगा।"**

बख्त ख़ान ने फ़ौज को संगठित किया, तोपखाने की ज़िम्मेदारी संभाली और अंग्रेज़ों पर ज़बरदस्त हमला बोला। वे साहसी, अनुशासनप्रिय और दूरदर्शी सेनापति थे।

लेकिन दुर्भाग्य से, दरबार के कुछ लोगों ने उनकी सलाहों को नज़रअंदाज़ किया — और यही सबसे बड़ी भूल साबित हुई।

अंततः अंग्रेज़ों ने दिल्ली पर दोबारा क़ब्ज़ा कर लिया। बख्त ख़ान बहादुरी से लड़े, पीछे हटे, लेकिन कभी हार नहीं मानी। आने वाले वर्षों में भी वे अंग्रेज़ों से जूझते रहे। **अंत में रणभूमि में वे शहीद हो गए।** उनकी मृत्यु पर अंग्रेज़ों ने राहत की साँस ली — क्योंकि **बख्त ख़ान जैसा वीर उनके लिए सबसे बड़ा ख़तरा था।**

आज उनकी समाधि कहाँ है, यह किसी को नहीं पता। लेकिन 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के एक पराक्रमी योद्धा के रूप में उनका नाम इतिहास में अमर है। अनेक सैनिकों और आम लोगों ने उनसे अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ लड़ने की प्रेरणा पाई।

सबक: देशभक्ति केवल भाषणों से सिद्ध नहीं होती — यह कर्म और बलिदान से सिद्ध होती है। **बख्त ख़ान ने स्वतंत्रता का स्वप्न देखा और अंतिम साँस तक उसके लिए लड़े।** आज हम स्वतंत्र भारत में जी रहे हैं, तो उसमें बख्त ख़ान जैसे अनगिनत अज्ञात वीरों का बड़ा योगदान है। उनके बलिदान को याद रखकर हमें भी ईमानदारी, साहस और सेवा-भाव से देश के लिए काम करना चाहिए।

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

बाबू गेनू – 22 वर्ष का निर्भीक क्रांतिकारी

स्थान: *पुणे, महाराष्ट्र*

आज मैं आपको एक युवक की कहानी सुनाने जा रहा हूँ। उम्र केवल 22 वर्ष... लेकिन साहस ऐसा कि ब्रिटिश हुकूमत ही हिल गई!

उसका नाम था **बाबू गेनू**। 1908 में, पुणे के एक गरीब दलित परिवार में बाबू गेनू का जन्म हुआ। घर की आर्थिक स्थिति बेहद कठिन थी। बचपन से ही वे कपड़ा मिल में मज़दूर के रूप में काम करने लगे। पढ़ाई पूरी नहीं हो पाई, लेकिन उनके दिल में देशभक्ति की लौ हमेशा जलती रही।

महात्मा गांधी के स्वदेशी आंदोलन का उन पर गहरा असर पड़ा। विदेशी वस्तुओं के प्रति उनके मन में घोर विरोध पैदा हो गया। 1930 में पूरे भारत में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया जा रहा था। लोग खादी पहनते थे और विदेशी कपड़े जलाते थे।

एक दिन, पुणे की सड़कों से एक ट्रक गुज़र रहा था। उसमें इंग्लैंड से लाए गए कपड़े थे और साथ में अंग्रेज़ अधिकारी उनकी रखवाली कर रहे थे। तभी वहाँ बाबू गेनू पहुँचे। उन्होंने ट्रक रोककर दृढ़ स्वर में कहा — **"यह विदेशी, देशद्रोही कपड़ा हमारी धरती पर नहीं बिकेगा! अगर बेचना है तो पहले मुझे कुचलना पड़ेगा!"**

अंग्रेज़ अधिकारी गुस्से से तिलमिला गया। उसने ट्रक चालक को आगे बढ़ने का आदेश दिया, लेकिन चालक ने इंकार कर दिया। क्रोध में अंग्रेज़ खुद ट्रक पर बैठा और चिल्लाया — **"इस भारतीय को मैं गाड़ी के नीचे कुचल दूँगा!"**

और फिर उसने ट्रक बाबू गेनू के ऊपर चढ़ा दिया। वे वहीं शहीद हो गए!

यह ख़बर आग की तरह फैल गई। हज़ारों लोग सड़कों पर उतर आए, विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। एक साधारण मज़दूर के बलिदान ने पूरे पुणे को आंदोलित कर दिया।

सबक: बाबू गेनू हमें सिखाते हैं कि **देशभक्ति** के लिए न तो धन की आवश्यकता होती है, न ऊँचे पद की — यह तो **दिल से जन्म लेती है।** अगर एक मज़दूर ने अपने प्राण देकर अंग्रेज़ों को रोक दिया, तो हम भी देश के लिए अवश्य कुछ कर सकते हैं।

आज जब आप खादी या कोई भी स्वदेशी वस्तु इस्तेमाल करते हैं, तो याद रखिए — आप बाबू गेनू का अधूरा सपना आगे बढ़ा रहे हैं।

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

अशफाकउल्ला खान

स्थान: *शहाजहानपूर, उत्तर प्रदेश*

भारत ब्रिटिशों के अधीन था — वह बहुत पुराना समय था। 1900 में उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर शहर में एक साहसी बालक का जन्म हुआ — उसका नाम था **अशफ़ाक़ुल्ला ख़ान**। वह पठान मुस्लिम परिवार से थे, लेकिन उनके हृदय में धर्म से बढ़कर देश के प्रति प्रेम गहराई से बसा हुआ था।

बचपन से ही उन्हें स्वतंत्र भारत का सपना आकर्षित करता था। अंग्रेजों के अन्याय से वे व्याकुल हो उठते थे और भारत को स्वतंत्र देखना ही उनकी सबसे बड़ी इच्छा थी।

धीरे-धीरे वे शहीद-ए-आज़म भगत सिंह और राम प्रसाद बिस्मिल जैसे क्रांतिकारियों के संपर्क में आए और *हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA)* नामक क्रांतिकारी संगठन में शामिल हो गए।

1925 में उन्होंने और उनके साथियों ने एक साहसी योजना बनाई — अंग्रेजों के ख़ज़ाने को लूटकर क्रांति के लिए धन एकत्र करना। यही योजना इतिहास में ***काकोरी कांड*** के नाम से प्रसिद्ध हुई। 9 अगस्त को उन्होंने एक ट्रेन रोककर अंग्रेजों का ख़ज़ाना लूटा। इस साहसिक कार्य से अंग्रेज हिल गए और क्रांतिकारियों की तलाश तेज़ कर दी गई।

कुछ महीनों बाद, अशफ़ाक़ुल्ला ख़ान अपने ही एक परिचित के विश्वासघात के कारण पकड़े गए। जेल में उन पर अमानवीय अत्याचार हुए, लेकिन अंग्रेजों ने कितनी भी पूछताछ की, उन्होंने किसी भी साथी का नाम उजागर नहीं किया। उन्हें फैज़ाबाद जेल में रखा गया।

19 दिसंबर 1927 को उन्हें फाँसी दी गई। फाँसी से पहले उन्होंने दृढ़ स्वर में कहा — ***"मैं मुसलमान हूँ, मेरा पुनर्जन्म में विश्वास नहीं है, लेकिन फिर भी मैं बार-बार भारत में जन्म लेना चाहता हूँ और हर बार देश के लिए बलिदान देना चाहता हूँ।"***

सबक: अशफ़ाक़ुल्ला ख़ान ने यह साबित किया कि सच्चा देशभक्त धर्म, जात या पंथ से ऊपर उठकर जीता है — वह केवल मातृभूमि के लिए जीता है और उसी के लिए अपने प्राण न्यौछावर करता है।

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

भाई कोतवाल - माथेरानचा क्रांतिवीर

स्थान: *माथेरान, महाराष्ट्र*

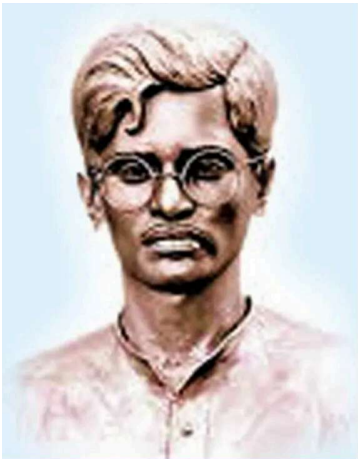

पहाड़ों की गोद में बसा माथेरान गाँव, वहीं एक साहसी युवक का जन्म हुआ — भाई कोतवाल। उनका हृदय केवल माथेरान के लिए नहीं, बल्कि पूरे भारत के लिए धड़कता था।

भाई कोतवाल एक होशियार विद्यार्थी, वकील और समाजसेवी थे। किसानों और गरीब परिवारों की मदद के लिए उन्होंने स्कूलें शुरू कीं और ज़रूरतमंदों को सस्ती दरों पर भोजन मिल सके, इसके लिए अनाज की दुकानें भी खोलीं। **उन्होंने लोगों को जात-पात और धर्म की दीवारें भूलकर आपस में मित्र बनने की प्रेरणा दी।**

उस समय अंग्रेज़ों के अत्याचार दिन-ब-दिन बढ़ रहे थे। युवाओं के मन में आक्रोश उमड़ रहा था। भाई कोतवाल ने ठान लिया — **"अब बहुत हो गया! अब हम आवाज़ उठाएँगे!"** वे भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल हुए और ठाणे ज़िले में भूमिगत रहकर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ काम करने लगे।

उनका सबसे बड़ा योगदान था — गुप्त सूचनाएँ पहुँचाना, अंग्रेज़ी टेलीफ़ोन लाइनों को काटना, ब्रिटिश गाड़ियों को बाधित करना... जिससे स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊर्जा मिली। अंग्रेज़ उनका पीछा कर रहे थे, लेकिन भाई कोतवाल कभी जंगल में, कभी पहाड़ों में, तो कभी गाँव में छिपकर अपना काम करते रहे।

लेकिन एक दिन, विश्वासघात के कारण अंग्रेज़ों ने उन्हें पकड़ लिया। उन्हें ठाणे जेल में डाल दिया गया। अंग्रेज़ों को लगा कि मृत्यु के भय से भाई कोतवाल सब राज़ खोल देंगे। लेकिन उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा और सारे रहस्य अपनी छाती में ही दबा लिए। हताश होकर, अंग्रेज़ों ने उन्हें मृत्युदंड की सज़ा सुनाई।

22 अगस्त 1943 को सज़ा सुनाई गई और 10 मई 1945 को भाई कोतवाल ने फाँसी के फंदे को हँसते-हँसते चूमा... लेकिन तिरंगे को कभी झुकने नहीं दिया।

सबक: भाई कोतवाल ने सिखाया कि स्वतंत्रता की लड़ाई केवल तलवार से नहीं, बल्कि साहस, बुद्धिमत्ता और निष्ठा से भी जीती जाती है। वे एक सच्चे *अनकहे* नायक हैं — जिनके बलिदान से आज हम खुली हवा में साँस ले सकते हैं।